दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में "भारतीय ज्ञान परंपरा क्या है" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजित

आगरा, 1 अगस्त 2025

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के हिंदी विभाग द्वारा 1 अगस्त 2025 को "भारतीय ज्ञान परंपरा क्या है" विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम कला संकाय के न्यू हॉल, सभागार में संपन्न हुआ, जिसमें जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के राजनीति अध्ययन केंद्र से प्रोफेसर मणीन्द्रनाथ ठाकुर ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता मोतीलाल नेहरू कॉलेज, नई दिल्ली के राजनीति विज्ञान विभाग के पूर्व आचार्य प्रोफेसर जी.एन. त्रिवेदी ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की समकालीन प्रासंगिकता और उसकी सामाजिक उपयोगिता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आज के वैश्वीकरण के दौर में भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः समझने और अपनाने की आवश्यकता है। इस व्याख्यान श्रृंखला के संयोजक डॉ बृजराज सिंह ने दोनों अतिथि वक्ताओं का स्वागत करते हुए श्रोताओं से उनका परिचय कराया। उन्होंने अपने स्वागत वक्तव्य में अतिथि वक्ताओं से अनुरोध किया कि वे श्रोताओं को भारतीय ज्ञान परंपरा के वास्तविक श्रोतों से परिचित कराएँ। भारतीय ज्ञान परंपरा के शोर में जरूरी और महत्वपूर्ण मुद्दों को सबके सामने रखने की कोशिश करें।

प्रोफेसर मणीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने व्याख्यान में भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध स्रोतों, जैसे वेद, उपनिषद, लोक परंपराएं, तर्कशास्त्र और दर्शन की परंपराओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में संवाद की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। परस्पर विरोधी विचारधाराओं के मध्य भी संवाद की गुंजाइश बनी रही है, जो इस परंपरा की विशेषता है। उन्होंने वैशाली का उदाहरण देते हुए बताया कि वहाँ बौद्ध, जैन और चार्वाक जैसे भिन्न विचारों वाले मत एक साथ पनपे और विकसित हुए। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखने की आवश्यकता पर बल दिया। उनके अनुसार, जिस प्रकार अनेक छोटी नदियाँ मिलकर एक बड़ी नदी को समृद्ध करती हैं, उसी प्रकार विविध ज्ञान परंपराएँ परस्पर संवाद के माध्यम से ज्ञान को नवीनता एवं ताजगी प्रदान करती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि संवाद के बिना कोई भी विचार जनमानस की चेतना में नहीं उतर सकता। प्रोफेसर ठाकुर ने पश्चिमी ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति पर प्रश्न उठाते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा को उसके स्वदेशी दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। उन्होंने इसे केवल धार्मिक विचारधारा तक सीमित करने की प्रवृत्ति की आलोचना करते हुए कहा कि भारतीय दर्शन लोकमंगलकारी और जनचेतना से परिपूर्ण रहा है। उन्होंने दुनिया भर के विचारकों और परंपराओं का

उल्लेख करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्धता को रेखांकित किया। इस अवसर पर उन्होंने अपनी पुस्तक *''ज्ञान की राजनीति''* की रचना प्रक्रिया से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं को भी साझा किया, जिससे श्रोताओं को भारतीय ज्ञान की संरचना और उसकी राजनीतिक भूमिका को समझने का अवसर मिला।

कार्यक्रम में कला संकाय की प्रमुख प्रोफेसर नीलू शर्मा, हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना, संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. अनीता, वाणिज्य संकाय प्रमुख प्रोफेसर वी.के. गंगल सहित विभिन्न विभागों के अध्यापकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। राजनीति विज्ञान विभाग से डॉ. अंजलि सेठ, डॉ अंजू शर्मा एवं डॉ. सुभांशी ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की।

कार्यक्रम का संचालन राजनीति विज्ञान विभाग की डॉ मोनिका तिवारी ने किया एवं धन्यवाद भी ज्ञापित किया जिसमें उन्होंने वक्ताओं एवं उपस्थितजनों का आभार व्यक्त किया।